E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विद्यालयीन संगीत शिक्षाः एक अध्ययन

शोध प्रपत्र

राम सखी सौर

शोध छात्रा

Paper Received date

05/04/2026

Publishing Date

10/04/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.20476833

IMPACT FACTOR 5.924

भारत देश में संगीत कला प्राचीन समय से ही गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत एक से दूसरे को हस्तांतरित होती आई है।गुरु शिष्य परंपरा इतनी अनुशासित एवं योजना बद्ध होती है कि वह एक पीढि से दूसरी पीढ़ी तक ग्रहण करते हुए वर्तमान समय में भी सफलता प्राप्त कर रही है। संगीत के योग्य गुरु और उनके योग्य शिष्यों की धरोहर आज हमारे पास है हम उनके ऋणी हैं।

वर्तमान आधुनिक युग में विद्यालयीन संगीत शिक्षा का महत्व अथवा चलन बहुत अधिक बढ़ गया है पहले तो किसी किसी परिवार में एकाध गवैये ही होते थे अथवा संगीत विद्यार्थी होते थे, किंतु वर्तमान समय में संगीत बहुत अधिक परिवारों में प्रयोग हो रहा है अथवा सीखा जा रहा है। संगीत विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में जब एक शिष्य अपने गुरु के द्वारा सिखाई गई गायकी को संगीत शिक्षा के अतिरिक्त विभिन्न गुणों से ओतप्रोत होकर संपादित करता है तथा गायकी में नवीनता का चित्रण करता है एवं नवीन स्वर लहरियों से अलंकृत करता है तब उसे नायक कहते हैं, उसकी कला कुशलता नायकी कहलाती है। विद्यालयीन संगीत शिक्षा का अर्थ है कि विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में संगीत विषय को भी एक पूर्ण विषय के रूप में मान्यता प्रदान की जाए। जैसे आजकल विश्वविद्यालय में हिंदी अंग्रेजी गणित भूगोल विज्ञान आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती है वैसे ही संगीत को एक पूर्ण विषय मानकर इसकी भी शिक्षा की व्यवस्था की जाये। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों को एक सरल कला सिखाना होता है तथा इसका दूसरा उद्देश्य लोगों को स्वावलंबी बनाना होता है। विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा से बेरोजगारी को कम करने में मदद मिलती है। यदि हम अन्य विषयों को देखें तो अन्य विषयों की तुलना में संगीत विषय में स्वरोजगार प्राप्त करना अधिक आसान होता है। विद्यालयीन

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संगीत शिक्षा को समझने के पूर्व हमें संगीत की उत्पत्ति एवं इसके विकास को विस्तार से समझना परम आवश्यक हो जाता है।

संगीत की उत्पत्ति के संबंध में ठाकुर राम सिंह तोमर ने अपनी पुस्तक संगीत सुरसरि भाग 1 में लिखा है ''अति प्राचीन काल में मनुष्य आनंद के क्षण में कुछ गुनगुना उठा होगा वहीं से संगीत की खोज हुई होगी। प्राणी जगत में मानव ही ईश्वर की सबसे उत्तम कृति है। कहते हैं अपनी ही शक्ल में ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है शायद इसीलिए संगीत का वरदान मात्रा मनुष्य को ही प्राप्त है। यद्यपि जड़ चेतन सभी के लिए संगीत संजीवनी जैसा है तथापि संगीत की अभिव्यक्ति अनुभूति केवल मनुष्य द्वारा ही संभव है।''[1]

इस बात का इतिहास साक्षी है कि सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों का कला पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। संगीत कला आश्रय चाहती है, फूलने फलने के लिए उसे स्वस्थ वातावरण एवं आवश्यकता होती है। संगीत में एक संकल्प शक्ति होती है जिसके तहत संगीत जिज्ञासु सतत निरंतर आगे बढ़ता रहता है। संगीत के संकल्प शक्ति के बारे में डॉक्टर लक्ष्मी नारायण गर्ग ने अपनी पुस्तक संगीत निबंध सागर में लिखा है कि ''संकल्प चेतन का सृजन सुख है, प्रत्येक संकल्प में आत्मा का स्व तत्व निहित रहता है। इसलिए प्रत्येक संकल्प विशुद्ध और मंगलकारी होता है। केवल मांगलिक भावना की सृष्टि कलात्मक सर्जन द्वारा होती है, इसलिए कला और कलाकार दोनों ही परम आदर्श और वंदनीय होते हैं। काव्य की कृति ऐसे संकल्प द्वारा निर्मित होती है जिसमें शक्ति का विराट स्वरूप और आनंद की अखंड श्रद्धा विद्यमान रहती है। सांसारिक चिंताओं के बोझ से दबे प्राणी की कला सर्जन में आनंद और शक्ति तत्व का समावेश बहुत कम देखा जाता है,अतः कला सृजन के लिए मानसिक शांति का होना परम आवश्यक है।''[2]

संगीत कला एक ऐसी साधना होती है जिसमें निरंतर अभ्यास एवं लगन शीलता की आवश्यकता होती है। विद्यालय संगीत शिक्षा का जब हम प्राचीन इतिहास का आकलन करते हैं तब हमें पता चलता है कि प्राचीन काल में भी नालंदा विश्वविद्यालय एवं तक्ष शिला विश्वविद्यालय ही संगीत शिक्षा के केन्द्र हुआ करते थे जिनमें संगीत शिक्षा दीजाती थी।

विद्यालयीन संगीत शिक्षा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए शास्त्रीय संगीत शिक्षा रूसमस्या एवं समाधान पुस्तक में ग्वालियर घराने के अति वरिष्ट कलाकार सम्माननीय बालासाहेब पूंछवाले ने भूमिका लिखते हुए

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

लिखा है कि ''घरानेदार संगीत शिक्षण का स्थान विद्यालय शिक्षा ने ले लिया है इसके भी अपने गुण दोष हमारे अनुभव में आ चुके हैं। इन्हीं अनुभवों को आधार मानकर इस संगोष्ठी में प्रस्तुत विचारों को पूर्ण गंभीरता और चुनौती से स्वीकार करना समय की आवश्यकता बन गई है। संगोष्ठी में व्यक्त तथा इस ग्रंथ में प्रकाशित विचारों ने एक दिशा दिखाई है। समन्वय की दिशा को मैंने प्रत्यक्ष देखा है। यह सच है कि कुछ युवा संगीतकारों को केवल विद्यालय संगीत शिक्षा का ही रस चखने को मिला होगा गुरु शिक्षा तो उनके लिए कथा कहानी का वर्णन हो चुका होगा, परंतु गुरु कृपा के स्वाद की ललक उन्हें भी आकर्षित करती है। यह तभी संभव है जब संस्थागत सामूहिक शिक्षण पद्धति में शिक्षक की भूमिका और गुरु शिष्य प्रणाली में गुरु की भूमिका के भेद को समाप्त किया जा सके। इस वर्ष में प्रकाशित अनेक विचार मंत्र लेखन के विचार जहां आकर थम गए से लगते हैं उन्हें क्रियान्वित करने का समय आ गया है संगीत शिक्षा में समन्वय को स्थापित करने के लिए समेकित प्रयास करना आवश्यक है।

मैं देख पा रहा हूँ कि संगीत शिक्षण संस्थाएं संगीत के नियमित पाठ्यक्रम के साथ व्यवहारिक संगीत का शिक्षण कम चालू कर पा रहीं हैं। स्थान स्थान पर प्रतिष्ठित संगीतज्ञ संगीत के विद्वान एवं स्थापित कलाकार संगीत शिक्षण संस्थानों को अपनाकर गुरुकुल संस्था एवं विद्यालय शिक्षण विभाग को समन्वित कल एक अच्छी शिक्षक प्रणाली विकसित करें ऐसी शिक्षण संस्थाओं का सशक्त संगठन एक आंदोलन का स्वरूप ले तभी समाज और राष्ट्र उनके पीछे खड़ा होगा।''[3]

एक स्थान पर डॉक्टर राकेश वाला सक्सेना में कहा था कि 'संगीत विद्यालयों की स्थापना तथा सामान्य शिक्षा के लिए खोले गए विद्यालयों में अन्य विषयों के साथ–साथ संगीत का एक विषय के रूप में मान्यता प्रदान किया जाना संगीत कला के शैक्षणिक पहलू का एक ऐसा चरण है जिसने संगीत व संगीतज्ञों को मध्यकालीन परिस्थितियों से प्रभावित संगीत के प्रति निम्न दृष्टिकोण रखने वाले समाज के बीच एक सम्मानजनक भावना की पुनर्स्थापना की।'

विद्यालयीन संगीत शिक्षा के विद्यालयीन संगीत शिक्षा के प्रचार प्रसार में संगीत के मूर्धन्य विद्वान पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी का विशेष योगदान रहा है। भातखंडे जी का मुख्य उद्देश्य ही था कि शास्त्रीय शुद्ध गायन वादन तथा हमारा उन्नत संगीत निरंतर नई पीढ़ियां को प्राप्त होता रहे। संगीत को जन सामान्य तक सुलभता से प्रदान करने के लिए उन्होंने विद्यालयीन संगीत शिक्षा पर बहुत जोर दिया। आपने अपने कार्यकाल

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में विभिन्न शहरों में विभिन्न संगीत संस्थानों का प्रारंभ किया। आपके द्वारा लिखित शास्त्रीय संगीत की क्रियात्मक पक्ष की पुस्तकें हमारे संगीत जगत की अमूल्य धरोहर सिद्ध हुई हैं।

संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली को अनेक विद्वानों ने जहां सार्थक सिद्ध माना है वहीं पर कुछ विद्वानों के अपने मतभेद सामने आए हैं। एक ओर जहां अनेक संगीतज्ञ संस्थागत संगीत पर शिक्षा प्रणाली को उपयोगी मानते हैं क्योंकि उनका मानना है कि इससे जन सामान्य शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त कर सकता है वहीं दूसरी ओर कुछ विद्वानों का अभिमत है कि विद्यालय संगीत शिक्षा का सबसे बड़ा दोष है कि संगीत विद्यालय में संगीत सीखा हुआ विद्यार्थी कभी भी पारंगत नहीं हो सकता है। क्योंकि शास्त्रीय संगीत तो एक कठोर तपस्या की भांति होती है जो कि योग्य गुरु और शिष्य के द्वारा आमने–सामने बैठकर दीर्घकालिक अवधि में प्राप्त की जा सकती है। विद्यालयीन संगीत शिक्षा को अधिक स्पष्ट एवं उजागर करने के उद्देश्य से डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की पूर्व विभाग अध्यक्ष डॉक्टर अलकनंदा पलनीटकर नें राष्ट्रीय सेमिनर आयोजित कराया जिसमें शास्त्रीय संगीत शिक्षा रु समस्यायें एवं समाधान विषय पर गहन मनन एवं चिंतन किया गया। इस सेमिनार में वर्तमान विद्यालय संगीत शिक्षा में कुछ कमियां उजागर हुई तथा कुछ उपलब्धियां भी उजागर हुईं। डॉ. अलकनंदा पॉलनीटकर ने विद्यालय संगीत शिक्षा की सार्थकता पर लिखते हुए अपने आलेख में लिखा है कि ‘‘सभी को सीखने का समान अधिकार व सुविधा प्राप्त हो इस उद्देश्य से स्वर्गीय विष्णु नारायण भातखंडे जी एवं पंडित विष्णु दिगंबर पुरस्कार जी ने अथक प्रयत्न कर स्वतंत्रता पूर्व ही संगीत के कुछ विद्यालय राजा महाराजाओं के दान एवं प्रयत्न से प्रारंभ किये। इस प्रकार पहली बार संगीत के विद्यालय खुले और आगे के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। यह विद्यालय कड़े नियमों के कारण व उचित संचालन के कारण गुणवत्ता में श्रेष्ठ थे परंतु स्थिति तब बदली जब इसे उत्तर काल में महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत को भी एक अन्य विषय की तरह रखा गया।’’[4]

उपरोक्त विभिन्न विद्वानों के विचारों का सार यही निकलता है कि संगीत विद्यालय संगीत शिक्षा बहु उपयोगी एवं बहुआयामी संगीत विद्या है। प्रतिभावान विद्यार्थियों की कमी कभी नहीं होती है किंतु संगीत विषय में तभी सफलता प्राप्त होगी जब नियमित रूप से इस लंबी कालावधि तक सीखा अथवा सिखाया जाए। आधा अधूरा ज्ञान,अनियमित अभ्यास,थोड़ी सी तैयारी व पाठ्यक्रम का थोड़ा सा भाग तैयार करके परीक्षा दे दी जाने से संगीत का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। परीक्षा लेने में भी लापरवाही की जा रही है। इसके मूल में भी कई कारण हैं। हम इन पर विचार करते हुए कह सकते हैं कि वर्तमान समय में संगीत की कक्षाओं में

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विद्यार्थियों को संगीत विषय का अल्प ज्ञान ही प्राप्त हो रहा है। संगीत विषय लेने वाले छात्रों का चयन किसी भी स्तर पर नहीं किया जाता है ना ही स्वर परीक्षण किया जाता है। अधिकांश कॉलेजों में एवं विद्यालयों में बिना किसी स्वर परीक्षण के अथवा प्रारंभिक सांगीतिक ज्ञान के संगीत में प्रवेश दे दिया जा रहा है जिससे हमारे शास्त्रीय संगीत का स्तर दिन व दिन गिरता जा रहा है। आज संगीत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अच्छे गुरुओं की निरंतर कमी आती जा रही है जिसके कारण विद्यालयीन संगीत शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। गिरते हुए संगीत के इस स्तर को उबारने के लिए भी मेरे कुछ सुझाव हैं जिससे निश्चित रूप से संगीत की स्थिति सुधर सकती है। जैसे कि उचित छात्र का चयन हो, प्रारंभिक शिक्षा पर जोर दिया जाए,विद्यार्थी के कंठ का ध्यान रखकर अध्यापन कार्य किया जाए।

विद्या मानव जीवन के अनुशासन का समुचित माध्यम है। यह संगीत अनुशासन की क्षमता एक विशिष्ट अधिकार अथवा माप दंड की अपेक्षा रखता है। विद्या ऐसे ही व्यक्तियों को अनुशासित करती है जो सतपात्र हो। गुणवत्तापूर्ण शास्त्रीय संगीत की विद्या का लाभ लेने के लिए योग्य गुरु से शिक्षा श्रवण एवं ग्रहण करना, विवेक, बुद्धि,कल्पना शक्ति तथा तत्व प्राप्ति के लिए यह गुण आवश्यक हैं। विषय के बारंबार शब्द से प्रज्ञा जागृत होती है। पाठ्यवस्तु को हृदयंगम करती है। अविरल मनोयोग से विद्या प्राप्त होती है। इसलिए संगीत के विद्यार्थी व शिक्षक दोनों को ही अपनी–अपनी उद्देश्य प्राप्ति हेतु उचित मार्ग से क्रियाशील रहना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तोमर, ठाकुर राम सिंह, संगीत सुरसरि भाग 1 बीना, सुरसरि संगीत प्रकाशन 2005 पेज 01
2. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, संगीत निबंध सागर, हाथरस संगीत कार्यालय सन् 2012 पृष्ठ 01
3. पूंछवाले, बालासाहेब, शास्त्रीय संगीत शिक्षा रू समस्याएं एवं समाधान। बीना (मध्य प्रदेश) आदित्य पब्लिशर्स, सन 2000 पृष्ठ – पुस्तक की भूमिका पेज viii
4. पालनीटकर, डॉक्टर अलकनंदा, शास्त्रीय संगीत शिक्षा : समस्यायें एवं समाधान। बीना (मध्य प्रदेश) आदित्य पब्लिशर्स, सन 2000 पृष्ठ 23